Fr – यीशु जीवन की रोटी हैं युहन्ना ६:२२-७१ | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु जीवन की रोटी हैं

युहन्ना ६:२२-७१

खोदाई: भीड़ यीशु से क्या करने को कहती है ताकि वे उस पर विश्वास कर सकें? उनका वास्तविक हित क्या है? येशुआ भोजन में उनकी रुचि का उपयोग यह दर्शाने के लिए कैसे करता है कि वह उन्हें क्या समझाना चाहता है? पद ३५-४० में मसीहा क्या दावा करता है? उसके जीवन की रोटी होने के बारे में ये दावे किस बात पर जोर देते हैं? पिता की इच्छा के बारे में? पद ४१-४२ में, भीड़ उसके दावों पर कैसे प्रतिक्रिया देती है? पद ४४-४५ में मसीह को जानने की प्रक्रिया में ईश्वर और लोगों द्वारा क्या भूमिका निभाई जाती है? यीशु ने जो रोटी दी वह मूसा की रोटी से बढ़कर कैसे है? परमेश्वर का मांस खाने और खून पीने का क्या मतलब है? मसीह के साथ विश्वासी के अटूट मिलन का वर्णन करें। जब योचनान कहते हैं कि आत्मा जीवन देता है (यूहन्ना ६:६३ए), तो उनका क्या मतलब है? जीवन की रोटी के बारे में इस शिक्षा से कौन से तीन परिणाम निकले?

चिंतन: आपकी संस्कृति में, येशुआ का अनुसरण करने का मुख्य कारण क्या है? आपका मूल उद्देश्य क्या था? आप अपने दैनिक आध्यात्मिक आहार का वर्णन कैसे करेंगे? जंक फूड? जमा हुआ भोजन? शिशु भोजन? टीवी माइक्रोवेव खाना? बचा हुआ? मांस और आलू? शुद्ध रोटी और शराब? क्या यीशु के साथ आपके परिचय ने आपको कभी यह देखने से रोका है कि वह वास्तव में कौन है? आप पर्दा हटाने के लिए क्या कर सकते हैं?

अगले दिन जब प्रभु ने चमत्कारिक ढंग से भीड़ को खाना खिलाया, तो भीड़ का एक हिस्सा रुक गया और बेथसैदा जूलियस की घास की ढलानों पर मसीहा की तलाश करने लगा। वे एक दिन पहले उसे राजा बनाने के लिए बहुत उत्सुक थे, इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि सुबह की रोशनी के साथ जो लोग वहां रुके थे वे एक बार फिर उसकी तलाश में थे। उन्हें एहसास हुआ कि गलील सागर के पार प्रेरितों के साथ केवल एक नाव बची थी और यीशु उसमें नहीं थे, इसलिए उन्होंने मान लिया कि शिष्यों अकेले ही झील के पार वापस चला गया था (योचनान ६:२२)।

तिबरियास से कुछ नावें रात के समय किसी समय बेथसैदा जूलियास के पास उतरी थीं, जहां लोगों ने प्रभु को धन्यवाद देने के बाद रोटी खाई थी (यूहन्ना ६:२३)। इसमें कोई संदेह नहीं कि उन्होंने तूफ़ान से बचने के लिए आश्रय लिया था। तिबरियास गलील सागर के पश्चिमी तट पर एक शहर था, जिसकी स्थापना हेरोदेस एंटिपास ने की थी और इसका नाम सीज़र ऑगस्टस की उपाधियों और शक्ति के उत्तराधिकारी सम्राट तिबेरियस

के नाम पर रखा गया था। क्योंकि इसे यहूदियों के कब्रिस्तान की जगह पर बनाया गया था, तानाख के धर्मी लोगों ने वहां रहने से इनकार कर दिया, जिससे इसे यूनानी यहूदियों और हेरोदेस के राजनीतिक सहयोगियों के लिए खुला छोड़ दिया गया।

परन्तु कुछ देर तक खोजने के बाद, भीड़ को एहसास हुआ कि न तो यीशु और न ही उसके शिष्य झील के उसी किनारे पर थे जहाँ वे थे, इसलिए वे तिबरियास से नावों में चढ़ गए और यीशु की तलाश में झील के पार कफरनहूम की ओर चले गए (यूहन्ना ६:२४)।

जब उन्होंने उसे झील के दूसरी ओर पाया, तो उन्होंने उससे पूछा, “रब्बी, तुम यहाँ कब आये” (योचनान ६:२५)? लोग यीशु को उस स्थान से इतनी दूर पाकर आश्चर्यचकित थे जहाँ उसे आखिरी बार इतने कम समय में देखा गया था, लेकिन उनका प्रश्न यह जानने की इच्छा से अधिक बताता है कि वह कब और कैसे आया था। प्रभु की प्रतिक्रिया के आधार पर, वे जानना चाहते थे कि वह वहां क्यों था (और शायद वहां नहीं जहां उन्होंने सोचा था कि उसे होना चाहिए) और वह जानबूझकर उनसे क्यों बच गया था!

मसीहा ने उनके प्रश्न को नज़रअंदाज कर दिया। यह छोटी-मोटी बातों के बारे में बात करने का समय नहीं था, इस बारे में बात करने का समय नहीं था कि वह गेनेसरेट कैसे पहुंचे। वह सीधे मुद्दे पर आ गया। यीशु ने कहा: मैं तुम से सच कहता हूं, तुम मुझे ढूंढ़ते हो, इसलिए नहीं कि तुम ने वे चिन्ह देखे जो मैं ने दिखाए थे, परन्तु इसलिये कि तुम ने रोटियां खाईं, और तृप्त हुए (यूहन्ना ६:२६)। चमत्कारी संकेतों से उनमें ईश्वर के प्रति चेतना जागृत होनी चाहिए थी, लेकिन वे केवल अपनी भौतिक आवश्यकताओं के प्रति ही सचेत थे। यह ऐसा है मानो येशु ने कहा हो, “आप अपने पेट के बारे में सोचने के बजाय अपनी आत्माओं के बारे में नहीं सोच सकते।” उन्हें मुफ़्त और भरपूर भोजन मिला था, हालाँकि वे और अधिक चाहते थे। हालाँकि, अन्य भूखें भी थीं, जिन्हें केवल वह ही संतुष्ट कर सकता था।

प्रभु ने भीड़ के प्रवक्ताओं को एक अभियोग के साथ जवाब दिया, जो मोशे के शब्दों की तरह लग रहा था (व्यवस्थाविवरण ८:२-३)। उस भोजन के लिये काम न करो जो सड़ जाता है, परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन तक कायम रहता है, जो मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा। क्योंकि उस पर परमेश्वर पिता ने अपनी स्वीकृति की मुहर लगा दी है (यूहन्ना ६:२७)। यहूदी जंगल में भटकते रहे क्योंकि वे यहोवा पर भरोसा करने में असफल रहे। वे वादा किए गए देश में प्रवेश करने में असफल रहे क्योंकि वहां के लोग उन्हें दिग्गजों की तरह दिखते थे। फिर भी, परमेश्वर ने उन्हें मन्ना के साथ बनाए रखा (मेरी टिप्पणी देखें निर्गमन Cr – मैं आपके लिए स्वर्ग से मन्ना की बारिश करूंगा), जबकि उन्हें सिखाया कि सच्चा भोजन परमेश्वर के मुंह से आता है (मत्तीयाहु ४:४)। जहां इस्राएली असफल हुए, वहां यीशु की जीत हुई और वह गहराई से चाहता था कि वे उसकी जीत से सीखें।

इसके बाद येशुआ ने भौतिक भोजन की, जो काम का परिणाम है और जल्दी खराब हो जाता है,

आध्यात्मिक भोजन की तुलना की, जो अनुग्रह से आता है और हमेशा के लिए रहता है। दोनों दो वैध मानवीय जरूरतों को पूरा करने के लिए आवश्यक हैं। वास्तव में, किसी एक के बिना जीवन कायम नहीं रह सकता। हालाँकि, जो भोजन खराब हो जाता है और जो भोजन अनन्त जीवन तक बना रहता है वह प्रतीकात्मक है, और यहाँ मसीह की टिप्पणियों का विषय बनता है। उन्होंने भीड़ को चुनौती दी कि वे खराब होने वाले भोजन के लिए काम करना बंद करें और अपनी आत्मा की भूख को संतुष्ट करने के लिए समान जुनून समर्पित करें। यह ऐसा था मानो मसीहा कह रहे हों, “जिस तरह परमेश्वर ने आपको शारीरिक रूप से रेगिस्तान में सहारा दिया और आपको अपने टोरा से भरने के लिए बुलाया, उसी तरह मैंने कल आपकी शारीरिक ज़रूरत पूरी की और अब आपको आध्यात्मिक भोजन प्राप्त करने के लिए बुला रहा हूँ।” यीशु के निमंत्रण की विडंबना पर ध्यान दें: उस भोजन के लिए काम करें जो अनन्त जीवन तक कायम रहता है, जो मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा। यह विरोधाभास यशायाह ५५:१ में परमेश्वर की पेशकश जैसा लगता है, “आओ, बिना पैसे और बिना कीमत के शराब और दूध खरीदो।”

तब उन्होंने उससे पूछा, “परमेश्वर की अपेक्षा के अनुसार कार्य करने के लिए हमें क्या करना चाहिए” (यूहन्ना ६:२८)? वे नाज़रीन की बात से पूरी तरह चूक गए। उन्होंने देने पर जोर देने को नजरअंदाज कर दिया और इसके बजाय, काम पर ध्यान केंद्रित करना चुना। वे भोजन पाने पर इतने केंद्रित थे कि वे अपने आध्यात्मिक अंधेपन के कारण प्रभु की आलंकारिक भाषा को समझ नहीं सके। यीशु ने अपने पहले के विरोधाभास को जारी रखा जब उसने उत्तर दिया: ईश्वर का एकमात्र कार्य उस पर विश्वास करना है जिसे उसने भेजा है, जिसमें वास्तव में कोई कार्य शामिल नहीं है (योचनान ६:२९)।

इसलिये उन्होंने उस से पूछा, फिर तू कौन सा चिन्ह देगा, कि हम उसे देखकर तेरी प्रतीति करें? क्या करेंगे आप?” यह उन लोगों के लिए एक बहुत ही अजीब सवाल है, जिन्होंने अभी-अभी उन्हें लगभग बीस हजार लोगों को केवल पांच छोटी जौ की रोटियां और दो छोटी मछलियों से खाना खिलाते देखा है (देखें Fn– यीशु ने ५,००० को खाना खिलाते हैं)। लेकिन ऐसा लगता है कि वे किसी एक को समान रूप से महान या महान प्रस्तुत करके इसके महत्व को कम करने पर आमादा हैं: हमारे पूर्वजों ने जंगल में मन्ना खाया था; जैसा कि लिखा है: “उसने उन्हें खाने के लिए स्वर्ग से रोटी दी” (निर्गमन १६:४-१२ और भजन १०५:४० देखें)। वे शारीरिक भोजन चाहते थे। यह ऐसा है मानो वे कह रहे हों, “मूसा स्वर्ग से मन्ना लाया, तू हमारे लिये क्या करेगा?” भीड़ का रवैया येशुआ के लंबे प्रवचन को जन्म देता है (यूहन्ना ६:३०-३१)।

लेकिन यीशु ने उन्हें याद दिलाया कि यह परमेश्वर था,
मूसा नहीं जो मन्ना लाया था। उसने उन से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि मूसा ने तुम्हें स्वर्ग से रोटी नहीं दी, परन्तु मेरा पिता ही है, जो तुम्हें स्वर्ग से सच्ची रोटी देता है। क्योंकि परमेश्वर की रोटी वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है और जगत को जीवन देती है (यूहन्ना ६:३२-३३)। वे एक रोटी राजा चाहते थे जो उन्हें खाना खिलाए और रोमनों को उखाड़ फेंके। “महाशय,” उन्होंने कहा, “यह रोटी हमें हमेशा दिया करो” (योचनान ६:३४)। उन्हें यह अभी भी समझ नहीं आया.

इसलिए, पापियों के उद्धारकर्ता ने स्वयं को असंदिग्ध रूप से स्पष्ट कर दिया। एक ही वाक्य में, उन्होंने विश्वास, रोटी, शाश्वत जीवन और स्वयं की अवधारणाओं को जोड़ा। तब यीशु ने घोषणा की: मैं जीवन की रोटी हूं (मेरी टिप्पणी देखें निर्गमन Fo – अभयारण्य में उपस्थिति की रोटी: मसीह, जीवन का रोटी)। यह यीशु के सात मै हूँ में से पहला है (योचनान ८:१२, १०:७, १०:११, ११:२५, १४:६, १५:१)। प्रत्येक व्यक्ति मुख्य चरवाहे के व्यक्तित्व और मंत्रालय का एक महत्वपूर्ण पहलू घर लाता है।

लेकिन मसीह की रोटी न केवल उनकी शारीरिक ज़रूरतें पूरी करेगी, बल्कि उनकी आध्यात्मिक ज़रूरतें भी पूरी करेगी। मनुष्य, शारीरिक भूख को संतुष्ट करने के लिए प्रेरित होते हैं, लेकिन आध्यात्मिक भूख से प्रेरित होते हैं। इस भूख का निदान आत्मा की बीमारी है, एक ऐसी बीमारी जिसके लिए आध्यात्मिक उपचार की आवश्यकता है। एक जीवन-घातक समस्या विकसित होती है जिसे शून्यता का रोग कहा जाता है। यीशु ने कहा: जीवन की रोटी मैं हूँ। जो कोई मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न सोएगा, और जो मुझ पर विश्वास करेगा वह कभी प्यासा न होगा (यूहन्ना ६:३५)। वह स्वयं भोजन है, वह आहार है जो आध्यात्मिक जीवन का पोषण करता है। केवल इस रोटी से ही हमें वास्तव में आध्यात्मिक जीवन प्राप्त होता है।

परन्तु जैसा मैं ने तुम से कहा, तुम ने मुझे देखा है, और फिर भी प्रतीति नहीं करते। (यूहन्ना ६:३६) येशुआ के अनुसार, विश्वास ईश्वर के प्रति प्रतिक्रिया करता है जब वह स्वयं को प्रकट करता है। तब, ईश्वर की उपस्थिति एक प्रकार की अग्निपरीक्षा बन जाती है। जो लोग उसके हैं वे विश्वास में प्रतिक्रिया देते हैं

और उसकी ओर आकर्षित होते हैं, जबकि जो लोग उसके नहीं हैं वे अविश्वास में प्रतिक्रिया देते हैं और उसे अस्वीकार करते हैं। यीशु, मानव शरीर में ईश्वर, अपने प्रियजनों को इकट्ठा करने के लिए पृथ्वी पर आए, जिन्हें उनके प्रति उनके विश्वास से पहचाना जा सकता है।

जिन्हें पिता मुझे देता है वे सब मेरे पास आएंगे, और जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी न निकालूंगा। यह पूर्वनियति और स्वतंत्र इच्छा के विरोधाभास का उतना ही संक्षिप्त बयान है जितना पाया जा सकता है। पिता ने पुत्र को कुछ लोग दिये हैं। मैं कैसे पता लगाऊं कि मैं उनमें से एक हूं? मसीह के पास आकर. मेरी स्वतंत्र इच्छा है और मैं आना चुन सकता हूं, और मेरे पास यीशु का वचन है कि वह मुझे दूर नहीं करेगा। यह जो कोई शब्द सार्वभौमिक है और हमें युहन्ना ३:१६ की याद दिलाता है। क्योंकि मैं अपनी इच्छा पूरी करने के लिये नहीं, परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूं। और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है, कि जो कुछ उस ने मुझे दिया है, उन में से मैं कुछ न खोऊं, वरन अंतिम दिन फिर उन्हें फिर उठा उठाऊं। तमाम अविश्वास के बावजूद, हमारा प्रभु उस मिशन को पूरा करने जा रहा है जिसके लिए उसे भेजा गया था। उनका मंत्रालय विफलता में समाप्त नहीं होगा। क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है कि जो कोई पुत्र की ओर देखे और उस पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए, और मैं उन्हें अंतिम दिन में जिला उठाऊंगा (योचनान ६:३७-४०)। यह बाइबल में विश्वासी की शाश्वत सुरक्षा के बारे में सबसे मजबूत अनुच्छेदों में से एक है (देखें Ms– विश्वासी की शाश्वत सुरक्षा)।

हम परमेश्वर की उपस्थिति में समय बिताकर उसकी इच्छा सीखते हैं। प्रभु के हृदय को जानने की कुंजी उसके साथ संबंध बनाना है। एक निजी रिश्ता। ईश्वर आपसे अलग ढंग से बात करेगा, जितना वह दूसरों से करेगा। सिर्फ इसलिए कि परमेश्वर ने जलती हुई झाड़ी के माध्यम से मोशे से बात की, इसका मतलब यह नहीं है कि हम सभी को उसके बोलने के इंतजार में एक के पास बैठना चाहिए। योना को दोषी ठहराने के लिए हाशेम ने व्हेल का इस्तेमाल किया। क्या इसका मतलब यह है कि हमें समुद्र तट पर पूजा सेवाएँ आयोजित करनी चाहिए? नहीं, प्रभु प्रत्येक व्यक्ति पर व्यक्तिगत रूप से अपना हृदय प्रकट करते हैं।

इसी कारण से, परमेश्वर के साथ आपका चलना आवश्यक है। उनका दिल कभी-कभार होने वाली बातचीत या साप्ताहिक मुलाक़ात में नहीं दिखता। जब हम हर दिन उसके घर में निवास करते हैं तो हम उसकी इच्छा सीखते हैं। काफी देर तक उसके साथ चलो और तुम उसके दिल को जान जाओगे।

इस पर यहूदी वहां उसके विषय में कुड़कुड़ाने लगे, क्योंकि उस ने कहा था, कि जो रोटी स्वर्ग से उतरी वह मैं हूं। (यूहन्ना ६:४१) इन दो छंदों में यहूदी, या इउदैओई शब्द का अर्थ अविश्वासियों जैसा कुछ है। उस पीढ़ी की तुलना मूसा की पीढ़ी से की जा रही थी। परमेश्वर ने जंगल में उनके लिए मन्ना उपलब्ध कराया था, परन्तु

वे फिर भी बड़बड़ाते रहे। अब यीशु उन्हें जीवन की रोटी दे रहा था, परन्तु वे फिर भी बड़बड़ाते रहे। उन्होंने कहा: क्या यह यूसुफ का पुत्र यीशु नहीं है, जिसके पिता और माता को हम जानते हैं (देखें Ey– यीशु की माता और भाई)? अब वह कैसे कह सकता है: मैं वह रोटी हूं जो स्वर्ग से उतरी (योचनन ६:४२)? इससे पता चलता है कि यहूदियों ने प्रभु के शब्दों को समझा कि वह दिव्य थे।

यीशु उनके अविश्वास का कारण अधिक विस्तार से बताते हैं। आपस में बड़बड़ाना बंद करो, यीशु ने उत्तर दिया: कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक कि पिता जिसने मुझे भेजा है वह उसे खींच न ले, और मैं उसे अंतिम दिन में जिला उठाऊंगा (यूहन्ना ६:४४-४५)। यह स्वतंत्र इच्छा के ढांचे में एक और अंतर्दृष्टि है। उनके शब्द प्रतिकार करने के लिए नहीं, बल्कि नम्र करने के लिए थे। यह उनके सामने दरवाज़ा बंद नहीं कर रहा था, बल्कि यह दिखा रहा था कि वे कैसे प्रवेश कर सकते हैं। इसका उद्देश्य यह कहना नहीं था कि उनके लिए कोई आशा नहीं है, बल्कि यह उस दिशा की ओर इशारा कर रहा था जिसमें उनकी आशा निहित है।

हमारे परमेश्वर ने तानाख से अपील करके जो कुछ कहा था उसकी पुष्टि की। भविष्यवक्ताओं में लिखा है: “वे सभी परमेश्वर द्वारा सिखाए जाएंगे” (यशायाह ५४:१३)। हर कोई जिसने पिता को सुना है और उससे सीखा है वह मेरे पास आता है। उन्हें यह विश्वास करने की आवश्यकता थी कि वह मसीहा था। वे अभी तक सुसमाचार पर विश्वास नहीं कर सके क्योंकि यीशु की मृत्यु नहीं हुई थी, न ही वह पुनर्जीवित हुआ था। परन्तु यदि वे उस पर मसीहा के रूप में विश्वास करते तो उन्हें अनन्त जीवन मिलता। जो परमेश्वर की ओर से है, उसके सिवा किसी ने पिता को नहीं देखा; केवल उसी ने पिता को देखा है (योचनन ६:४५-४६)। कहने का तात्पर्य यह है कि परमेश्वर ने उन्हें सुनने के लिए कान और समझने के लिए हृदय दिया है। परन्तु जिन्हें परमेश्वर ने यहूदी और यूनानी दोनों कहा है, उनके लिए मसीह परमेश्वर की शक्ति और परमेश्वर की बुद्धि है (प्रथम कुरिन्थियों १:२३)।

तब मसीह ने सत्य की उस पंक्ति का अनुसरण किया जो पद ४४ में शुरू हुई थी। मैं तुम से सच कहता हूं, जो विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का है। यह खोए हुए लोगों के लिए निमंत्रण नहीं है, बल्कि बचाए गए लोगों के लिए एक घोषणा है। मैं जीवन की रोटी हूं (यूहन्ना ६:४७-४८)। यह ऐसा था मानो यीशु कह रहा हो, “मैं वह हूँ जिसकी सभी पापियों को आवश्यकता है, और जिसके बिना वे निश्चित रूप से मर जायेंगे। मैं ही वह हूं जो आत्मा को संतुष्ट कर सकता है और दुखित हृदय को भर सकता है। मैं ऐसा इसलिए हूं क्योंकि, जैसे गेहूं को पीसकर आटा बनाया जाता है और फिर उसे मानव उपयोग के लिए उपयुक्त बनाने के लिए आग के हवाले किया जाता है, उसी तरह मैं भी, स्वर्ग से पृथ्वी पर आया हूं, मृत्यु की पीड़ा से गुजरा हूं, और मैं अब परमेश्वर के वचन में उन सभी के लिए प्रस्तुत किया गया है जो जीवन के लिए भूखे हैं।”

तुम्हारे पुरखाओं ने जंगल में मन्ना खाया, तौभी वे मर गए। परन्तु यहाँ वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है, जिसे कोई खा सकता है और नहीं मरेगा। मैं वह जीवित रोटी हूं जो स्वर्ग से उतरी है। जो कोई यह रोटी खाएगा वह सर्वदा जीवित रहेगा। यह रोटी मेरा मांस है, जिसे मैं जगत के जीवन के लिये दूंगा। (योचनन ६:४९-५१) मनुष्य के पुत्र का मांस खाना उसके अस्तित्व और जीने के पूरे तरीके को आत्मसात करना है। यहां प्रयुक्त मांस के लिए शब्द (ग्रीक: सार्क्स) सामान्य रूप से मानव स्वभाव, मानव अस्तित्व के शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक और वाष्पशील पहलुओं को भी संदर्भित कर सकता है। येशुआ चाहता है कि हम उसके जैसा जियें, महसूस करें, सोचें और कार्य करें; रुआच हाकोडेश की शक्ति से वह हमें ऐसा करने में सक्षम बनाता है। इसी तरह, उसका खून पीना उसके आत्म-बलिदान जीवन को अवशोषित करना है, क्योंकि मांस का जीवन खून में है (लैव्यव्यवस्था १७:११)।

तब यहूदी लोग आपस में तीव्र वाद-विवाद करने लगे, “यह मनुष्य हमें अपना मांस कैसे खाने को दे सकता है” (यूहन्ना ६:५२)? तर्क का तात्पर्य यह है कि कुछ लोग दृढ़ता से मसीहा के पक्ष में थे, हालाँकि निम्नलिखित कथा से यह स्पष्ट होता है कि उनकी संख्या बहुत अधिक रही होगी। यीशु ने दृष्टांतों में बात की ताकि अविश्वासी लोग उसे समझ न सकें (देखें Er – उसी दिन उसने उनसे दृष्टान्तों में बात करना शुरू किया)।

यीशु ने यहां जो कहा, उसके कारण बड़बड़ाना (पद ४१) जल्दी ही बहस में बदल गया (पद ५२), फिर एक कठिन शिक्षा जिसे वे स्वीकार नहीं कर सके (पद ६०), और अंत में उनके कई शिष्यों (बारह प्रेरितों के लिए नहीं) के लिए एक दुर्गम बाधा बन गई जो पीछे मुड़ गया और फिर उसके पीछे न गया (पद ६६)।

यीशु ने उनकी ग़लतफ़हमियाँ दूर करने की कोशिश नहीं की। उनकी समस्या बौद्धिक नहीं थी। इसके बजाय उसने उनका भ्रम बढ़ा दिया और दृष्टांतों में बोलना जारी रखा क्योंकि वास्तविक विश्वासियों को खोने का कोई खतरा नहीं था। जब उसने उन से कहा, तो वह तनिक भी पीछे नहीं हटा, मैं तुम से सच कहता हूं, जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ, और उसका लोहू न पीओ, तुम में जीवन नहीं। अधिकांश यहूदियों को यह नहीं पता था कि येशु लाक्षणिक रूप से बात कर रहा था और यह उनके लिए बेहद घृणित था क्योंकि टोरा में कहा गया था: तुम्हें खून नहीं खाना चाहिए (लैव्यव्यवस्था ७:२६)। जो बात नकारात्मक रूप से कही गई थी वह अब सकारात्मक रूप से कही गई है। जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है, अनन्त जीवन उसी का है, और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊंगा। (यूहन्ना ६:५३-५४) क्योंकि तोराह ने आदेश दिया: तुम्हें खाना नहीं चाहिए . . कोई भी रक्त (लैव्यव्यवस्था ३:१७) यह भाषा आलंकारिक होनी चाहिए। यह वह लहू है जो किसी के जीवन के लिए प्रायश्चित करता है (लैव्यव्यवस्था १७:११)। मसीहा के सुननेवाले उसके पेचीदा शब्दों से चौंक गए होंगे। लेकिन यह पहेली इस समझ से खुलती है कि यीशु अपनी मृत्यु के द्वारा प्रायश्चित करने और उन लोगों को जीवन देने की बात कर रहे थे जो व्यक्तिगत रूप से विश्वास के द्वारा उसे उपयुक्त बनाते

हैं।

अन्य वस्तुएँ सच्चे अर्थों में भोजन नहीं थीं। प्रभु ने पहले ही बताया था कि उनके पूर्वजों ने जंगल में मन्ना खाया था, फिर भी वे मर गए (योचनान ६:४९)। उनके विरोधियों को पता ही नहीं था कि सच्ची रोटी क्या होती है। क्योंकि मेरा मांस असली भोजन है और मेरा खून असली पेय है। जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है वह मुझ में बना रहता है, और मैं उन में (यूहन्ना ६:५५-५६)। ईसा मसीह के साथ अटूट मिलन होगा। इसका मतलब यह है कि पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के माध्यम से, विश्वासी का मसीहा के साथ वास्तविक जुड़ाव इस तरह से होता है कि जो मसीह के लिए सच है वह विश्वासी के लिए सच हो जाता है, उसके देवता को छोड़कर। हमें मेशियाक में रखा गया है: दूसरा कुरिन्थियों ५:१७; रोमियों ८:१; यूहन्ना १५:४ और वह हम में स्थापित है: कुलुस्सियों १:२७; गलातियों २:२०; यूहन्ना १४:१८-२०. हमें येशुआ के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया है: गलातियों २:२० और रोमियों ६:६। हम प्रभु के साथ मर गये: रोमियों ६:४. हम उसके साथ पुनर्जीवित हुए हैं: इफिसियों २:६ और रोमियों ६:५। और हम यीशु के साथ बैठे हैं: इफिसियों १:३, १९-२० और २:६; कुलुस्सियों ३:१-२; रोमियों ६:८.

इस मिलन की विशेषताएं व्यक्तिगत और अंतरंग हैं जैसा कि इसका वर्णन करने के लिए उपयोग किए गए आंकड़ों से प्रदर्शित होता है: बेल और शाखाएं (यूहन्ना १५:५); नींव और इमारत (प्रथम पतरस २:४-५; इफिसियों २:२०-२२); पति और पत्नी (इफिसियों ५:२३-३२; प्रकाशितवाक्य १९:७-९); सिर और शरीर (इफिसियों ४:१५-१६); और पिता और पुत्र (यूहन्ना १७:२०-२१)।

तब येशु अपने मिशन की भावना पर वापस आता है: जैसे जीवित पिता ने मुझे भेजा है और मैं पिता के कारण जीवित हूं, वैसे ही जो मुझे खिलाएगा वह मेरे कारण जीवित रहेगा। यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरी है। तुम्हारे पुरखाओं ने मन्ना खाया और मर गए, परन्तु जो कोई यह रोटी खाएगा वह सर्वदा जीवित रहेगा। उन्होंने यह बात कफरनहूम के आराधनालय में उपदेश देते समय कही (योचानन ६:५७-५९)। उन्होंने वहां एक अन्य अवसर पर बात की थी (देखें Ck – यीशु एक अशुद्ध आत्मा को बाहर निकालते हैं)।

उन्हें उस पर विश्वास करने की ज़रूरत थी जिसे परमपिता परमेश्वर ने अनन्त जीवन पाने के लिए भेजा था। वह वह करेगा जो मन्ना नहीं कर सका। इसने भौतिक जीविका प्रदान की, परन्तु यह अनन्त जीवन प्रदान नहीं कर सका। यीशु जो कहना चाह रहे थे वह यह था कि शरीर में लिया गया भोजन शरीर का हिस्सा बन जाता है। इसलिए जो लोग मसीहा में अपना विश्वास रखते हैं उनका विश्वास उनमें जीवित रहेगा, और बदले में, वे उसमें जीवित रहेंगे।

स्पष्ट रूप से इसका यीशु के कई शिष्यों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा, जिनकी भक्ति की डिग्री अलग-अलग थी। कम से कम सैकड़ों लोग इतने गंभीर थे कि उन्हें अपना रब्बी मानते थे और सक्रिय रूप से उन्हें राजा बनाने के आंदोलन का समर्थन करते थे।

लेकिन मसीह जानते थे कि उनकी भक्ति एक अस्थिर प्रकार की थी जो गर्म और ठंडी होती रहती है। यह सुनकर, उनके कई शिष्यों ने कहा: यह एक कठिन शिक्षण है। इसे कौन स्वीकार कर सकता है (यूहन्ना ६:६०)? हार्ड शब्द (ग्रीक: स्केलेरोस) का अर्थ है सूखा, खुरदरा, अडिग, या असुविधा के बिना प्राप्त न होना। जो कुछ भी उन्होंने स्वीकार नहीं किया उसे कठोर कहा जाएगा। नाज़रीन को समझना मुश्किल नहीं था, बस स्वीकार करना मुश्किल था।

यह जानते हुए कि उनके शिष्य इस बारे में बड़बड़ा रहे थे, येशुआ ने बड़बड़ाने वालों को एक प्रश्न के साथ चुनौती दी: क्या इससे आपको ठेस पहुँचती है? तो क्या होगा यदि तुम मनुष्य के पुत्र को वहाँ चढ़ते देखो जहाँ वह पहले था (यूहन्ना ६:६१-६२)! यह ऐसा था मानो अच्छा चरवाहा कह रहा हो, “यदि तुम मेरे दावे को स्वीकार नहीं कर सकते कि मैं स्वर्ग से आया हूँ और तुम्हें मेरा मांस खाना होगा और मेरा खून पीना होगा; जब मैं तुमसे कहूँगा कि मैं स्वर्ग में वापस आऊँगा तो तुम क्या सोचोगे? यदि आपको लगता है कि यह शिक्षण कठिन है, तो आपके पास बाद में आने वाले शिक्षण का कोई मौका नहीं है।”

जब युहन्ना कहता है कि आत्मा जीवन देता है (युहन्ना ६:६३ए), तो उसका मतलब है कि विश्वास के क्षण में मसीह की सारी धार्मिकता हमारे आध्यात्मिक खाते में स्थानांतरित हो जाती है (देखें Bw – विश्वास के क्षण में परमेश्वर हमारे लिए क्या करता है)। इसका धार्मिक नाम प्रतिरूपण है। बाइबल हमें सिखाती है कि हम सभी को आदम का पापी स्वभाव विरासत में मिला है। जैसे एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हो गए हैं (रोमियों ५:१२ और ३:२३)। तनाख़ में कुर्बानी देनी पड़ी। खून बहाना पड़ा, और मौत होनी ही थी; इसलिए, क्रूस पर मेशियाक की मृत्यु के कारण हमारे पास एक परिपूर्ण, निरपेक्ष, धार्मिकता है जिसे परमपिता परमेश्वर ने अपने पुत्र के माध्यम से हम पर लागू किया है। अपने विश्वास के कारण, हमने ब्रह्मांड की यहोवा की अंतिम परीक्षा सौ प्रतिशत के साथ उत्तीर्ण की है। जब यहोवा हमें देखता है, तो वह हमारा पाप नहीं देखता, वह अपने पुत्र की धार्मिकता देखता है (रोमियों १:१७)। हम पवित्र में हैं, और वह हम में है। स्वर्ग तक पहुँचने का एकमात्र रास्ता यीशु मसीह की सिद्ध धार्मिकता का परिणाम है।

मांस कोई मदद नहीं है. जो वचन मैं ने तुम से कहे हैं – वे आत्मा और जीवन से परिपूर्ण हैं (योचनान ६:६३बी-सी सीजेबी)। यह कुछ ग्रीक द्वैतवादी अर्थों में शरीर का उन्नयन नहीं है, बल्कि एक विशिष्ट यहूदी दावा है कि ईश्वर की आत्मा के बिना, भौतिक चीजों का अपने आप में कोई वास्तविक मूल्य नहीं है।

उनके शब्दों को स्वीकार करना जितना कठिन था, वे अनन्त जीवन उत्पन्न करेंगे। फिर भी, प्रभु से जो अपेक्षा की गई होगी उसके बावजूद, आप में से कुछ लोग हैं जो

कभी भी यहूदा के बारे में बात करते समय उस पर हमला नहीं करते। वे बस तथ्यों को रिकॉर्ड करते हैं और उन्हें अपने लिए बोलने देते हैं। अधिक से अधिक, जैसा कि यहाँ है, वे उल्लेख करते हैं कि वह शिष्यों में से एक था, लेकिन फिर भी उन्होंने पाठकों को केवल यह बताने दिया कि यह उसके अपराध की विशालता को कैसे बढ़ाता है।

१९१५ में पादरी विलियम बार्टन ने लेखों की एक श्रृंखला प्रकाशित करना शुरू किया। एक प्राचीन कथाकार की पुरातन भाषा का उपयोग करते हुए, उन्होंने अपने दृष्टान्तों को सफेड द सेज के उपनाम से लिखा। और अगले पंद्रह वर्षों तक उन्होंने सफ़ेद और उसकी स्थायी पत्नी केतुराह के ज्ञान को साझा किया। यह एक ऐसी शैली थी जिसका उन्होंने आनंद लिया। कहा जाता है कि १९२० के दशक की शुरुआत तक सफ़ेद के अनुयायियों की संख्या कम से कम तीन मिलियन थी। एक सामान्य घटना को आध्यात्मिक सत्य के चित्रण में बदलना हमेशा बार्टन के मंत्रालय का मुख्य विषय रहा है।

मैं हमेशा बूढ़ा नहीं था, लेकिन एक बार जवान था। और मैंने भविष्यवक्ताओं के स्कूल में यात्रा की। और प्रभु के दिन से एक दिन पहले मैं हर सप्ताह उन्नीस मील की यात्रा करता था ताकि रविवार को मैं एक ऊंचे मीनार वाले छोटे सफेद चर्च में लोगों को परमेश्वर का वचन सुना सकूं। और सोमवार को, मैं फिर से घर चला गया। और कई बार सड़कें ख़राब होती थीं, यहां तक कि मेरा घोड़ा जितना आगे बढ़ता था, वह आधा फुट की गहराई तक कीचड़ में डूब जाता था; इसलिए वहां पहुंचने से पहले मैं नौ मील और आधा मील कीचड़ से होकर गुजरा। लेकिन जब मैं पहुंचा तो अच्छे लोगों ने गर्म घरों में मेरा स्वागत किया और बिस्तरों को साफ किया और मेरे सामने गर्म खाना रखा।

क्योंकि मैं उनके बीच में चढ़ गया। और पहली जगह जहां मैं रविवार से पहले तैयारी दिवस पर रुका था, उस अच्छी महिला ने मेरे सामने नारियल केक रखा। और मैंने इसे खूब खाया.

अब दूसरे घरों की स्त्रियों ने उस से पूछा, तुझे जवान मंत्री कैसा लगा? और क्या उसका मनोरंजन करना कठिन है? और क्या उसने तुम्हें बहुत परेशान किया? और क्या वह उधम मचाता है? और उसे क्या खाना पसंद है?

और उसने कहा, वह उधम मचाता नहीं है, और उसने मुझसे कहा कि नारियल केक उसका पसंदीदा केक है।

अब सभी महिलाओं ने अन्य सभी महिलाओं से कहा, युवा मंत्री को नारियल केक बहुत पसंद है। और वे सभी जानते थे कि नारियल केक कैसे बनाया जाता है, और उन सभी ने इसे बनाया। और मैं जहां भी गया, वहां उन्होंने मेरे सामने नारियल केक रख दिया।

अब आप शायद अपने दिल में सोचेंगे कि मुझे इतना नारियल केक मिला कि मुझे इससे नफरत हो गई और तब से मुझे यह कभी पसंद नहीं आया। लेकिन आपके पास एक और चीज़ आ रही है।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]